गुगुलेतु शहर नहीं

मुक्ता

गुगुलेतु शहर नहीं

कहानी

मुक्ता

गुगुलेतु शहर नहीं

वह धाराप्रवाह बोलता जा रहा था। मातृभाषा न उसकी थी न मेरी। उसकी बातों से उभरकर एक मंगोलियन पीले चाँद-सा गोल-मटोल चेहरा शरारती आँखों के पीछे से झाँकने लगा था। दो लाल शहतूत-से होंठ खिलखिलाने लगे थे। मैं बार-बार महसूस कर रही थी, मीलों लंबी हवा दो फाँकों में बँट जाए और हाथ बढ़ाकर मैं उस चेहरे को चूम लूँ। वह परेशान-सा पूछ बैठा-

" क्या हुआ आंटी ?"

" क्या तुम किसी तरह भी नहीं आ सकते ?" मेरी बातों में कोई तारतम्य नहीं था। सिलसिला बन ही नहीं पा रहा था। कुछ बातें क्रम से परे होती हैं। वर्षो बाद आज एक बार फिर मैं यह अनुभव कर रही थी।

" मेरी फ्लाइट बारह बजे है। मैं करोलबाग में शॉपिंग कर रहा हूँ। इस समय नौ बज चुके हैं। "

" तुम्हारी माँ मेरी प्यारी सहेली है। "

हम सब आपको बहुत याद करते हैं आंटी। माँ हमेशा कहती है, उस देश में तुम्हारी एक और माँ हैं। "

" बेटा, तुम्हारा नाम...?" वाक्य टूट गया। यह चौथी बार मैंने नाम पूछा था। मैं घने वृक्ष की ओर बढ़ रही थी। रह-रहकर पैर नर्म दूब में उलझे जा रहे थे।

" प्रसित सुपन्या "... " बेटे तुम देखने में कैसे हो ? अपनी माँ जैसे ?"

" कितनी सुंदर है तुम्हारी माँ... "

" मैं वादा करता हूँ आंटी, लौटकर कॉलेज खुलने से पहले हम कई दिन एक साथ बिताएँगे। "

" तुम्हारी माँ ने कुछ लाने को नहीं कहा? मुझसे कुछ माँगा नहीं ?"

" ओह! याद दिलाने के लिए धन्यवाद। माँगा है एक पता और यह भी कहा है

कि यह पता सिर्फ आपके पास ही मिल सकता है। "

" सिर्फ मेरे पास? किसका पता माँगा है ?"

" एंटोनियो बया का पता। "

" एंटो-नि-यो बया लेकिन...निताया को कैसे मालूम ?"

" आप परेशान मत हों। मैं आपसे ले लूँगा। हम जल्दी ही मिलेंगे। "

फोन कट चुका था। प्रसित की आवाज मुझे दूर सफर पर ले जा चुकी थी जहाँ से जल्दी लौटना संभव न था।

" व्हाट्स रांग विथ यू ? आई नेवर फाइंड यू स्माइलिंग ?" एंटोनियो बया ने पूछा था वर्षों पहले!

मेरे चेहरे पर फीकी मुस्कान थी। सीने में अनंत आक्रोश। मैं बहुत कुछ कहना चाहती थी। पापा-मम्मी की हाड़तोड़ मेहनत के बावजूद न ढंग के कपड़े न किताब-कापियों के लिए पूरे पैसे। पापा और मम्मी एक-दूसरे के लिए बने ही नहीं थे। ऐसा कोई धरातल नहीं था जहाँ दोनों के बिंब जुड़ते हों। मम्मी की आशाओं पर भयंकर तुषारापात हुआ जब शेखर भैया के रूप में पापा का प्रतिरूप सामने आ खड़ा हुआ। कल मम्मी की महत्त्वाकांक्षाओं की अंतिम लड़ी भी धू- धू करके जल गई। "

" कल से नाच बंद! या तो इंजीनियरिंग कॉलेज में पढ़े या नाच सीखे। एक को चुन लो। अनु और अनु की माँ, दोनों सुनो। मेरी हैसियत इतनी नहीं है। "

" लेकिन अनु की फीस मैं भर रही हूँ। " मम्मी ने विरोध किया।

" यह घर तुम्हारे पैसे से नहीं चलता। " पापा का स्वर ऊँचा हो चुका था।

" मम्मी, तुम्हारी जिद ने पहले ही अनु का मन बहुत बढ़ा दिया है। पहले नाच सिखाने की जिद, अब इंजीनियरिंग कॉलेज में पढ़ाना है। लड़कों के साथ यह जो गुल खिलाएगी वह हम सबको भोगना होगा। चार पैसे बचेंगे तो घर का स्टैंडर्ड ही सुधरेगा। अनु का ब्याह भी करना है। " यह शेखर भैया की उद्धारवादी मुद्रा थी।

" तीन बार बी. ए. में फेल होनेवाला स्टैंडर्ड की बातें कर रहा है और मेरे होते हुए किसी को अनु के ब्याह की चिंता नहीं करनी है। " मम्मी ने तिलमिलाकर उत्तर दिया।

" शेखर, घुँघरू-तबला सब ऊपर टाल पर चढ़ा दो। घर को कोठा बना दिया है। मोहल्लेवालों के ताने तो हमें सुनने पड़ते हैं। आज से अनु का नाच-गाना सब बंद।" पापा निर्णय दे चुके थे।

मम्मी फफककर रो पड़ी थीं। संगीत-साहित्य के धुरंधर विद्वान् पं. सोमदत्त उपाध्याय की लाडली बेटी रुक्मिणी देवी अपना क्षोभ रो-रोकर गला रही थी। यह नजारा मैंने बार-बार देखा है। कभी भी मम्मी का विरोध ठोस चट्टान नहीं बन पाया। वह गलकर धीरे- धीरे बहा है।

हमारा घर स्त्री और पुरुष के ऐसे दो खेमों में बँट चुका था जहाँ केवल हमारे हस्ताक्षर टटोले जाते थे। शेखर भैया और पापा के चेहरे गडमड थे। बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी के इंजीनियरिंग कालेज में दाखिला मेरी अपनी काबिलीयत और मेहनत का नतीजा था लेकिन शेखर भैया के आगे मेरी हैसियत ट्रायल पर छूटे कैदी जैसी थी जिसकी एक नामालूम-सी गलती उसे फाँसी पर चढ़ाने के लिए काफी थी।

मैं बहुत कुछ कहना चाहती थी। लेकिन मेरे पास शब्द नहीं थे। कहाँ थी मेरे पास लच्छेदार अंग्रेजी जिसे मैं शेक्सपियर के एक वाक्य में गूँथकर एंटोनियो बया के कानों में उड़ेल दूँ ? राजकीय कन्या पाठशाला में पढ़ी एक गँवार लड़की को क्या अधिकार जो झक चमकदार देशी-विदेशी छात्रों की जमात के बीच बैठकर हिंदी में खिलखिलाए ?

मैंने अपनी कमजोरियों को अपनी चुप्पी में छिपा लिया था। अब मैं एक शांत, सौम्य गँगी सपनीली आँखोंवाली लड़की थी।

" मेरी अंग्रेजी बहुत कमजोर है। कभी-कभी उत्तर नहीं सूझता और मैं हकलाने की हद तक नर्वस हो जाती हूँ।" फर्राटेदार अंग्रेजी में थाइलैंड की निताया, मेरी सहपाठिनी मेरे सामने अंग्रेजी न आने का दुखड़ा बयान कर रही थी।

मैं खिलखिलाकर हँस पड़ी। " तुम झूठ समझ रही हो, यह सच है। लेकिन तुम रुको नहीं, हँसती रहो। कितनी सुंदर लगती हो, ऐसे ही हँसती रहो।"

हम दोनों एक-दूसरे का हाथ थामे देर तक खिलखिलाते रहे। हम दोनों दोस्त बन चुके थे। भोजन-अवकाश को छोड़कर लगभग पूरे दिन हम साथ होते थे।